24 जुलाई, 2019 को बालयोगी सभागार, संसदीय ज्ञानपीठ में, राज्य सभा के माननीय उपसभापति श्री हरिवंश और श्री रविदत्त बाजपेयी द्वारा लिखित पुस्तक 'चन्द्रशेखर: द लास्ट ऑइकन ऑफ आइडियोलोजिकल पोलिटिक्स' का विमोचन

सबसे पहले मैं, इस पुस्तक के विमोचन के अवसर पर आज यहां आमंत्रित करने के लिए राज्य सभा के माननीय उपसभापति श्री हरिवंश जी का हार्दिक आभार व्यक्त करता हूं।

इस पहल के लिए मैं पुस्तक के लेखक श्री हरिवंश जी और श्री रवि दत्त बाजपेयी जी को हार्दिक बधाई देता हूँ और उनकी सराहना करता हूं। श्री हरिवंश जी ने अपने व्यस्त कार्यक्रम के बावजूद भारत के पूर्व प्रधानमंत्री श्री चन्द्रशेखर-हमारे समय के एक महान समाजवादी और गांधीवादी विचारधारा के एक सच्चे नेता के जीवन पर इस प्रामाणिक पुस्तक की रचना और उसका प्रकाशन किया। माननीय चन्द्रशेखर जी के एक निकट सहयोगी की यह वास्तव में एक प्रशंसनीय पहल है।

इस अवसर पर मुझे यह कहते हुए प्रसन्नता हो रही है कि लोकतांत्रिक संस्थाओं को सुदृढ़ बनाने तथा राष्ट्र निर्माण में उनके योगदान को देखते हुए लोक सभा सचिवालय ने वर्ष 2016 में इस सम्माननीय नेता के जीवन पर अंग्रेजी और हिन्दी दोनों भाषाओं में एक स्मृति खंड प्रकाशित किया था। उससे पहले 4 मई, 2010 को संसद भवन के केन्द्रीय कक्ष में श्री चन्द्रशेखर जी के एक चित्र का अनावरण भी किया गया था।

उत्कृष्ट राजनेता, श्री चन्द्रशेखर एक दृढ़ निश्चयी पर सीधे-सादे और स्पष्टवादी व्यक्ति थे। 1962 में पहली बार उत्तर प्रदेश से राज्य सभा के लिए चुने जाने के बाद उनका संसदीय जीवन आरंभ हुआ। चार दशक के अपने उतार-चढ़ाव से भरे हुए और उत्कृष्ट संसदीय जीवन के दौरान वह आठ बार लोक सभा के लिए और तीन बार राज्य सभा के लिए निर्वाचित हुए। यह उनके नेतृत्व में जनता के दृढ़ विश्वास को दर्शाता है।

एक साधारण पृष्ठभूमि से आने वाले श्री चन्द्रशेखर नवम्बर, 1990 में विश्व के सबसे बड़े कार्यशील लोकतंत्र के प्रधानमंत्री बने। प्रधानमंत्री के रूप में उनका कार्यकाल बहुत छोटा था परंतु उतार-चढ़ाव से भरी इस अवधि के दौरान वह एक कुशल प्रशासक के रूप में उभर कर सामने आए।

यद्यपि, उन्होंने एक नई विचारधारा की शुरूआत की थी तथापि, वैचारिक प्रतिबद्धता की दृष्टि से आचार्य नरेन्द्र देव के एक सच्चे शिष्य होने के नाते वह समाजवाद के प्रति पूर्णत: समर्पित रहे। इस संदर्भ में, मैं यह कह सकता हूं कि इस पुस्तक का शीर्षक 'चन्द्रशेखर: द लास्ट आइकन ऑफ आइडियोलोजिकल पोलिटिक्स' बहुत सटीक और उचित है ।

अपनी दूरदर्शिता और सुधारवादी दृष्टिकोण के साथ चन्द्रशेखर एक उत्कृष्ट सांसद थे। सभा में विचार-विमर्श के दौरान वह बहुत प्रभावशाली, धाराप्रवाह वक्तव्य देकर अपनी वाकपटुता का परिचय देते थे। उनका वाक् चातुर्य इतना सम्मोहक था कि संसद की दोनों सभाओं में उनकी बातों को सदैव बहुत ध्यानपूर्वक सुना जाता था।

अपने भाषणों और वक्तव्यों से वह निर्धनता, समानता, उत्पीड़न, किसानों की दुर्दशा आदि जैसी आम समस्याओं और मुद्दों पर राष्ट्र का ध्यान आकृष्ट करने का प्रयास करते थे। संसद की पद्धतियों और प्रक्रियाओं के नियमों में प्रवीण होने के साथ-साथ, वह लोकतांत्रिक संस्थाओं की मर्यादा और गरिमा का बहुत सम्मान करते थे और उन्होंने उनका आजीवन पालन किया। उद्देश्य के प्रति उनकी ईमानदारी और उनके सौम्य स्वभाव ने उन्हें अन्य राजनैतिक दलों के नेताओं में भी लोकप्रिय बना दिया। उनके योगदान को देखते हुए उन्हें 1995 में उत्कृष्ट सांसद पुरस्कार से सम्मानित किया गया था।

श्री चन्द्रशेखर एक महान जननेता थे, जिन्होंने आम लोगों के कल्याण के लिए निरंतर कार्य किया। उन्होंने 1983 में कन्याकुमारी से दिल्ली के राजघाट तक 4260 किलोमीटर की पदयात्रा की। उनकी पदयात्रा उनके राजनैतिक जीवन की ऐतिहासिक घटना थी जिसने लोगों को उनके अधिकारों और कर्त्तव्यों के प्रति जागरूक करने में सहायता की।

पदयात्रा के दौरान वे आम जनता के साथ संपर्क स्थापित करने और जमीन से जुड़ी समस्याओं को समझने में सफल हुए। अपनी पूरी यात्रा के दौरान उन्होंने पेयजल, स्वास्थ्य सुविधाओं, प्रत्येक गांव के लिए शिक्षा, आदिवासियों की समस्याओं और साम्प्रदायिक सद्भाव के मुद्दों पर बल दिया।

एक असाधारण राजनैतिक व्यक्तित्व होने के साथ-साथ श्री चन्द्रशेखर जी मानवतावादी भी थे। उनकी भावनाओं की गहराई उनके लेखों और भाषणों में प्रतिबिम्बित होती है। उनकी पुस्तकें, 'मेरी जेल डायरी' और 'डायनेमिक्स ऑफ सोशल चेन्ज' उनके साहित्यिक कौशल और मौलिक विचारों को बखूबी दर्शाती हैं।

राजा कैसा होना चाहिए, इसके बारे में चंद्रशेखर ने पुराणों की एक कथा को उद्धृत किया था। देवताओं के राजा इंद्र सूर्य देव को कहते हैं कि समंदर के पानी को सोख लो, फिर वायु देव को कहते हैं कि इन बादलों को रेगिस्तान में ले जाओ और वरूण देव को कहते हैं कि यहां बारिश कर दो। अतः, राजा का यह कर्त्तव्य है कि जिनके पास अपनी जरूरत से ज्यादा है, उनसे लेकर वे गरीबों में वितरित करने का प्रयास करें। इस संबंध में एक बार उन्होंने बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में कहा थाः-

"गुलिस्ताँ में कलियाँ तरसती रही,

समंदर में बरसात होती रही।"

इस बात को हरिवंश जी ने इस किताब में बेहतरीन ढंग से प्रस्तुत किया है।

अपने निडर और क्रांतिकारी विचारों के लिए 'युवा तुर्क' कहे जाने वाले श्री चन्द्रशेखर 'यंग इंडियन' पत्रिका के संस्थापक थे। पुस्तकें हमारे जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं और अनेक लोगों के लिए पुस्तकें पढ़ना उनकी दैनिक दिनचर्या का एक हिस्सा होता है। पुस्तकें हमारे जीवन में एक शिक्षक, मार्गदर्शक और मित्र की महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। विशेषकर किसी महान व्यक्ति पर आधारित पुस्तक पढ़ने के पश्चात् हम सकारात्मक, एकाग्र, ऊर्जावान और रचनात्मक बन जाते हैं। हम ऐसे विशिष्ट व्यक्तियों द्वारा स्थापित आदर्शों और उनकी जीवनशैली तथा समाज के कल्याण के लिए किए गए कार्यों से प्रेरित होते हैं। मैं अपनी युवा पीढ़ी से

अनुरोध करता हूं कि वह अपने दिन-प्रतिदिन के कार्यों से थोड़ा समय निकालकर महान व्यक्तियों के जीवन पर आधारित पुस्तकें पढ़कर प्रेरित हों और जीवन में आगे बढ़ें।

अपना भाषण समाप्त करने से पहले मैं भारतीय राजनीति के सर्वोत्कृष्ट व्यक्तियों में से एक श्री चन्द्रशेखर जी के जीवन और कार्यों पर आधारित पुस्तक का प्रकाशन करने हेतु किए गए अथक प्रयासों के लिए माननीय उपसभापति श्री हरिवंश जी की सराहना करता हूं और उन्हें एक बार पुन: बधाई देता हूं। मैंने यह नोट किया कि यह पुस्तक अंग्रेजी भाषा में है। मुझे विश्वास है कि इसका हिंदी संस्करण भी शीघ्र ही प्रकाशित किया जाएगा ताकि बड़ी संख्या में लोग इस पुस्तक को पढ़ सकें।

यह पुस्तक नि:संदेह चन्द्रशेखर जी के जीवन का प्रामाणिक चित्रण प्रस्तुत करके उनकी रिक्तता को भरती है और जन कल्याण के लिए उनके महत्वपूर्ण योगदान को प्रदर्शित करती है। मुझे आशा है कि यह पुस्तक सांसदों, शिक्षाविदों, विद्यार्थियों और चन्द्रशेखर जी के समर्थकों के लिए अत्यंत उपयोगी और ज्ञानवर्धक साबित होगी।

*****